चौथी झलक

अफ्रीका में कुली बैरिस्टर गांधी

गांधी जी अब्दुल्ला सेठ के दीवानी के मुकदमे में पैरवी करने के लिए मुम्बई से डरबन रवाना हो गए। जहाज में भीड़ होने के कारण उसके कप्तान ने उन्हें अपने केबिन में स्थान दे दिया। वह उनका मित्र बन गया और रोज उनके साथ शतरंज खेलने लगा। उसने उन्हें शतरंज का अच्छा खिलाड़ी बना दिया। मई 1893 को नेटाल के बंदरगाह डरबन पर जहाज ने लंगर डाल दिया । जहाज से उतरने पर चारों ओर के वातावरण से गांधी जी को यूरोपीय और भारतीयों के बीच भेदभाव का आभास हो गया।

दक्षिण अफ्रीका में भारत के मुसलमान व्यापारियों की संख्या सबसे अधिक थी। उसके अनुपात में हिन्दू, पारसी और ईसाइयों की संख्या कम थी। यूरोपीय गोरे भारतीयों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन्हें 'काला कुली' (तिरस्कार सूचक) नाम से पुकारते थे। अदालती कागजों में भी भारतीयों के लिए कुली विशेषण जुड़ने लगा था। अपमान से बचने के लिए भारतीय मुसलमान अपने को अरब, पारसी एवं ईरानी कहने लगे थे।

भारतीयों के दक्षिण अफ्रीका में पहुँचने का भी इतिहास है। जब गोरे दक्षिण अफ्रीका में बस गए, तब उन्हें वहाँ के खनिज पदार्थों को निकालने और कृषि कार्य के लिए मज़दूरों की आवश्यकता पड़ी । वहाँ रहने वाले अफ्रीकी (जुलू) इस कार्य के लिए योग्य नहीं पाए गए। वे स्वभाव से सुस्त थे, मजदूरी नहीं करना चाहते थे। अँग्रेजों का ध्यान भारतीयों की ओर गया। उन्हें विश्वास था कि गरीब भारतीय मजदूर आसानी से राजी हो जाएँगे। अतः ब्रिटिश उपनिवेशों ने भारत सरकार से मज़दूर भेजने की प्रार्थना की। उन्होंने यह शर्त रखी कि मज़दूर पाँच वर्ष के शर्तनामे पर अफ्रीका आएँ और अवधि पूरी हो जाने पर चाहें तो भारत लौट जाएँ अथवा दक्षिण अफ्रीका में रहकर पाँच वर्ष के लिए पुनः प्रतिज्ञाबद्ध हो जाएँ। लौटने के लिए वापसी किराया देने की भी शर्त थी। जो भारतीय बसना चाहें उन्हें किराए के मूल्य की जमीन देकर बसने की भी छूट थी। इस शर्तनामे

के अनुसार जो भारतीय कुली दक्षिण अफ्रीका गए वे गिरमिटिया कहलाए। उनकी पहली टोली सन् 1860 में दक्षिण अफ्रीका पहुँची। धीरे–धीरे भारतीय व्यापारी भी अफ्रीका पहुँचने लगे । भारत सरकार ने गिरमिटियों के साथ भेदभाव न बरतने और उन्हें स्थानीय कानून के अंतर्गत बराबरी का दर्जा दिए जाने की शर्त रखी थी। ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया ने सन् 1858 में यह घोषणा जारी की थी कि हमारे भारतीय साम्राज्य के नागरिकों को वे सब अधिकार प्राप्त होंगे जो हमारे अन्य सब प्रजाजन को प्राप्त हैं। भारतीय, नेटाल में ही नहीं, आरेंज फ्री स्टेट, ट्रांसवाल और केप प्रांत में भी गए और व्यापार करने लगे।

दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीय अपने परिश्रम से अनाज, फल, सब्जी आदि की अच्छी खेती करते और उन्हें सस्ते दामों में बेचते थे। इससे इन्हें लाभ होता था। गोरे व्यापारियों को उनसे ईर्ष्या होती थी। अतः उन्होंने अपनी सरकार से भारतीयों पर अनेक प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया।

गांधी जी को भारतीयों के प्रति होने वाले भेदभाव के विरुद्ध कड़ा संघर्ष करना पड़ा। आए तो थे एक वर्ष में सेठ अब्दुल्ला के मुकदमे को निपटाने के लिए, पर उन्हें वहाँ समस्त भारतीयों को उनके नागरिक अधिकार दिलाने के लिए 21 वर्ष से अधिक समय तक रुकना पड़ा। उन्होंने सन् 1914 में अफ्रीका से अंतिम विदाई ली थी। अफ्रीका पहुँचने पर गांधीजी को जिन परिस्थितियों में काम करना पड़ा उन्हें जान लेने के पश्चात् अब हम उन पर बीती घटनाओं और उनके कार्यों से परिचय प्राप्त करेंगे।

अभ्यास

1. यूरोपीय गोरे भारतीयों को 'काला कुली' कहकर क्यों पुकारते थे ?
2. गोरों ने भारत सरकार से अफ्रीका में मज़दूर भेजने की प्रार्थना क्यों की थी ?
3. गोरे व्यापारियों को भारतीयों से ईर्ष्या क्यों होने लगी ?
4. गांधी जी को 'कुली बैरिस्टर गांधी' क्यों कहा गया है ?